SAJMS

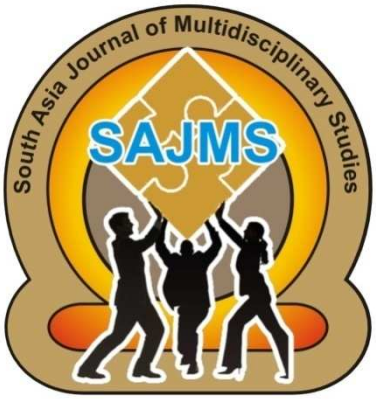

VOLUME-5

DECEMBER 2020, VOL. 5, NO.1

Mailing Address

Business Manager 4830/24, Ansari Road Darya Ganj

New Delhi-110002

India

Principal Contact

Dr. Anil Mehra

Chief Editor

Regional Office, South Asia Management Association 4830/24, Ansari Road

Darya Ganj New Delhi-110002 India

Phone: 9644794563Email: chiefeditorsajms@gmail.com

TABLE OF CONTENTS

1.	Dr.Anita Jhariya	:	The Subaltern Voice in the Early Romantic Poetry
2.	Dr. Rajesh Chaursia	:	The Study on Seasonal Parameters of Water in Hanumantal Lake of Jabalpur
3.	Dr. B.L. Jharia	:	Environment and Diversity of Mangrove Plant Communities in India
4.	Dr. Seema Dhurvey	:	Biodiversity Concept And Concerted Efforts For It's Conservation
5.	Dr. Joodika Kujoor	:	Diversity of Bixa orellana L., the food dye plantwith medicinal properties
6.	Bhuneshwar Temre	:	Ecology of Food Habits in Tribal Areas of Seoni-Chhindwara Plateau of M.P.
7.	रंजीता कमलेश	:	भूगोल अनुसंधान में दूर संवेद का उपयोग (भेड़ाघाट क्षेत्र अध्ययन पर आधारित)
8.	डॉ. पी. एल. झारिया	:	काव्यकादम्बके चित्रितं लोकतत्त्वम्
9.	Dr. T.P. Mishra	:	SOCIAL AND CULTURAL ISSUES OF WOMEN ELECTED REPRESENTATIVES IN PANCHAYAT RAJ
10.	Rajendra Sonwane	:	GENDER DIMENSIONS OF HIV/AIDS AND SOCIAL WORK PRACTICE IN INDIA
11.	Dr. R.S. Dhurvey	:	youth in the indian society: recret of with special reference to rural youth
12.	Dr. Jyoti Singh	:	Problems And Prospects Of Urban Youth In Theindian Society
13.	Dr. Arjun Singh Baghel	:	India's Economic Interests in Central Asia and Kazakhstan
14.	Dr. Shrikant Shrivastava	:	The National Rural Employment Guarantee Act: Issues And Challenges *(*A Case Study of Jabalpur District of Madhya Pradesh State)
15.	डॉ. नवीनटेकाम	:	सबाल्टर्न (निम्नवर्गीय प्रसंग) अध्ययन के परिप्रेक्ष्य मेंरेणु की कहानियाँ
16.	डॉ. एस. पी. धूमकेती	:	डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य मेंलोकसंस्कृति के चित्र
17.	Dr. M.K Nagesh	:	Some Tribes of Western Madhya Pradesh: Their Economy and Change in Livelihood Patterns
18.	Jagdish Prasad Shivwanshi	:	Globalisation Challenges To Indian Agriculture
19.	डॉ. वंदना उरकुड़े	:	गोंड राज्य की स्थापत्य कला का ऐतिहासिक अध्ययन
20.	Dr. J.L.Barmaiya	:	Nutritional Intake Pattern Rural Community Wise A Case Study of Mandla Dindori Region
21.	Paras Ram Thakre	:	Today's Commercial Development And Banking Sector In India
22.	श्रीमति नसीम बाना	:	सामाजिक पर्यावरण एवं उच्च शिक्षा में अनुसंधान की गुणवत्ता

ISSN:2395-1079 Available online at http://wwwSajms.edwin.co.in

South Asia Journal of Multidisciplinary Studies SAJMS December 2020, Vol. 5, No1

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य मेंलोकसंस्कृति के चित्र

डॉ. एस. पी. धूमकेती

हिन्दीविभाग

रानीदुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तरमहाविद्यालय, मण्डला (म.प्र)

साहित्यकारजिसमिट्टीमेंपलताहै, बढ़ताहै, उस मिट्टी के लोकजीवन का यथार्थउपस्थितकरनेमेंवह अग्रणी होताहै। 'सुमन' जीअपनेपैतृकग्रामझगरपुर के ग्राम्य परिवेशमेंअल्प समय तकहीरहेहैं।उनकाअधिकांश जीवन रीवा, ग्वालियर, बनारस, उज्जैन के शहरीपरिवेशमेंबीताहै, फिरभीउनकीबहुत–सीकविताएँ लोकसंस्कृति के चित्र प्रस्तुतकरतीहैं। उनके काव्य मेंआमजन–जीवन के दु:ख–दर्द, संघर्ष–पीड़ा के साथग्राम्य परिवेश, प्रकृतिऔरलोक–संस्कृति से जुड़ेपर्व, त्योहार, रीति–रिवाज, गीत–संगीतआदि की बहुरंगीछवियाँ अंकितहुईहैं।मालवाअंचल की माटीऔर क्षिप्रानदी के आस–पास के परिवेश से कवि का गहरालगाव–जुड़ावरहाहै।वेअपने 'हिल्लोल' प्रथमकाव्य संग्रह के उत्तरार्द्ध से ही यथार्थ की ठोसभूमिपर खड़ेहोकरलोक–जीवन के अधिकाधिकनिकटआजातेहैं।माटी की सोंधीगंध औरबैसवाड़ाअंचल से जुड़े खेत, खलिहान, पनघट, अमराई, ताल–तलैयाआदि के संदर्भउनकीस्मृति–पटलपरसदारहेहैंय यथा

'खलिहान, खेत, टीले, ऊसर/अमराईऔरजीर्णपनघट/मेरीस्मृति के हैंचिह्नअमर/''1

कवि ने अपनेपैतृकगाँवमेंस्थित घर के दाहिनीओरबसी 'अहीरों की बस्तीमेंरहनेवालेलोक–जीवन की सम्पूर्णऔरठेठदेसीपन के साथजीवंतझाँकीप्रस्तुत की है, जिसमेंकवि का ग्राम्य प्रेमप्रत्यक्ष हुआहैय यथा

' 'हैं घास–फूस के घरउनके/दरवाजेचौपाए बँधते/दिन चढ़े जहाँ गोरेहाथों/मथनीमथती, कंडेपथते/उनकेगोकुल के संस्कार/गायों–भैंसों का सुखदसंग।''

आंचलिक जीवन मेंसुबहजल्दीउठकरपरिवार के लिए स्त्रियों द्वाराअनाजपीसने की परम्पराहै, वहभीकविलेखनी से प्रकटहुईहै– ''थीताल–सीदेतीहुई/दोचक्कियाँ घुरू /घुरूर घुर/सूर्योदय के साथहीलोक–जीवन के दैनिकक्रिया–कलापआरंभहोजातेहैं, उनकोकवि ने प्रत्यक्ष देखा है, तभीतोउन्होंनेबैसवाड़ाअंचल के लोगों के खान–पानऔजारोंसहितमजदूरी के लिए तैयारहोते रूप का सजीवअंकनकियाहैय यथा

''मिर्चा, पनेथीऔरडेली/लेनमक की हाथमें/हल एक कंधेपर धरेहँसियालिए निजहाथमें/किसओरजाएगापथिक यह तोअभीअज्ञातथा।''

इसीतरहप्रातःकालमें एक ओरअंचल के लोगसामान्य खाद्य सामग्री के साथअपनेमवेशियोंकोचरानेहेतुबीहड़ भूमिमेंजातेहैंतोदूसरी–ओर संध्या के समय स्त्रियाँ पनघटपरपानीभरतीहैं, का स्वाभाविक, सहजचित्र कवि ने आत्मीयता के साथउपस्थितकियाहैय यथा

''होताप्रभातकुछ चने बाँध/चलतेलाठी से हाँकढोर/फिरदिनभरनापाहीकरते/बन–बीहड़ सरिता–तटअछोर/होती संध्या ढंकतेदिगंत/जिनकेचरणों की धूलचूम/ग्वालिनियाँ कटिसिरपर घट धर/चलपड़तीहँस–हँसझूम–झूम।''

प्रस्तुतचित्र, जिसमें अकृत्रिम जीवन जीने वालेलोगों का ग्रामीण दृश्य है, कविकोपूर्णतः अपनीजमीन से जोड़ताहै।ग्रामीण कृषि–संस्कृति से किसानप्रत्यक्ष रूप से जुड़ाहोताहै।कर्मठता के साथउसकासारा जीवन धरती की गोदऔरउसकी छत्र छायामेंबीतताहै।इसी रूप का अंकनकवि ने 'चलरहीउसकीकुदाली' शीर्षककवितामेंकियाहै। खेतमेंकर्मरतकिसान के लिए पत्नी द्वारा खाद्य–सामग्रीलेजाने की लोकपरंपराकोभीकवि ने 'सुखिया' पात्र के माध्यम से ठेठदेसीपनमें वाणी दीहै– ''आरहीवह खोलझोंटाध्एक पुटली, एक लोटाध् किसानसारेसंसारकोरोटीदेताहै, किंतुस्वयंअभावग्रस्त जीवन जीतेहुए भीसदाआशान्वितबनारहताहै।वहअपनीपत्नी से कहताहै

''देखनाभगवानचाहेगा/उगेगी खूबजुन्हरी

फिरमिलाहमनोन–मिरचा/भरसकेंगेपेट खाली।''

कृषि–कर्मकरनेवालीस्त्रियों की सामान्य वेशभूषा, औजार, आभूषणआदिभीकविलेखनी से प्रत्यक्ष हुआ, जिसमें उनके सामान्य जीवन जीने का ग्रामीणपरिदृश्य हैय यथा

''लहँगासमेटेगाँठतक/पहनेगिलट के गुड़हरे/खुरपी लिए,
खंचियालिए/अनुरागअंचलमेंभरे/छूकर कृषकसुकुमारियोंकोविधुरविस्मितवातथा।''

उपर्युक्त उद्धरणोंमेंसमसामयिकलोक–जीवन की अनुगूंजसघनता के साथसुनीजासकतीहै। यहाँ ग्रामीण जीवन के खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा, आभूषण, दैनिकक्रिया–कलाप, ठेठदेहाती शब्दों का प्रयोगआदिमेंआंचलिकपरिदृश्य साकारहुआहै, जिसेलक्षितकरकहाजासकताहैकिकविलोक–जीवन के विभिन्नस्तरों से गुजरेहैं, उसेउन्होंनेप्रत्यक्ष देखा है, भोगाहै।अतः लोक–जीवनमेंउनकीगहरीपैठहै।

माटी की सोंधीगंध का केंद्रीय सरोकार 'मिट्टी की बारात' संग्रह की 'इनकोचूमो', 'आषाढ़ का पहलादिवस', 'पावकपरस', 'आभास', 'अंगारेऔर धुआँ', 'मिट्टी की संवेदना', 'मिट्टी की बारात' सरीखीकविताओंमेंहुआहै।कवि ने 'कीचड़–कालिख से सनेहाथ/इनकोचूमो की संवेदना द्वाराकिसान, मजदूर, श्रमिक, जो धरती का आमजनहै, के प्रतिआत्मीयतास्थापित की है।मिट्टी के प्रतिगहरेलगाव का अर्थहै–आमआदमीऔरउसकीजिंदगी से गहरालगाव–जुड़ाव।कवि धरा की सोंधीगंध से ऊर्जस्वितहोकरसमाज की जर्जरव्यवस्थाकोबदलने के आकांक्षीहैं।आषाढ़ माह की पहलीवर्षामेंहीकविकिसानको खुशऔरउसकीफसलोंकोलहराती देखनाचाहतेहैंय यथा

''हरप्रातः में/गोपाल से पहलेउठे/हलधरहठी

जोते धरा की पीरको... /चूनरउड़ती, खिलखिलाती

झूमतीफसलें/ क्षितिज के छोर से/ उठतीदीखें/ लुटतीदीखें।''

इसीतरह– ''गेहूँ की पकीफसल/काटरहेहैंकिसान की संवेदनामेंभी कृषि–कर्म से जुड़ालोक–जीवनप्रत्यक्ष हुआहै।

ग्राम्य प्रकृति का अंकनभीबहुत–सीकविताओंमेंहुआहै। शरद, बसंत, ग्रीष्म ऋतुओं के भीकवि ने आत्मीयता के साथचित्र उकेरेहैं। 'तीनचित्र' कवितामेंबसंतऋतु का उल्लासअंकितहुआहै, जिसमेंपशु–पक्षी, मानव, पौधेसभीप्रसन्नहोउठेहैं। 'गाँवमेंबरसात' कवितावर्षा ऋतु की ग्रामीण प्रकृतिकोसाकारकरतीहैय यथा

"वर्षा की झड़ीटूटीनहींपखवारे से/घुमड़ी घटाओं का ओर–छोर....

स्फीत वक्ष बरगदवा/पुरखों के पौरुष–सा/निर्भय ललकाररहा

अंधियारेअंधड़ को/बूढ़ी परदादी–सी/द्वार खड़ीगझिन नीम

गाजहतफाटपड़ी/जर्जरशिवालेपर/भूलुंठितकरतीउसके त्रिशूलशिखर।

गुरांस, टेसु, शिरीष, महुए, मौसमीआदिकईफूलों, नीम, बरगद, पलाशआदिकई वृक्षोंतथा घर–आँगन, खेत–खलिहानमेंक्रीड़ाकरतेपशु–पक्षी के प्रतिभीकवि का आत्मीय लगावहै।गौरय्या, तितली, भ्रमरआदि के मानवीय संवेदना से आपूरितचित्र प्रस्तुतहुए हैं। एक उद्धरणप्रस्तुतहै

''कच्चीमिट्टी की दीवारें/घास–पात का छाजन/मैंनेअपनानीड़ बनाया/तिनके–तिनकेचुन–चुन/यहाँ कहाँ से तूआबैठी/हरियाली की रानी

जीकरतातूझे चूमलूँ/ लेलूँ मधुर बलय्या/ मेरेमटमैलेअंगनामेंफुदकरहीगौरय्या।

'प्रवाहऔरपरंपराकवितामेंकवि ने 'क्षिप्रानदी' कोमालवाअंचल के ऐतिहासिक घटनाक्रमोंकोकहतेहुए, सजीव रूपमेंप्रस्तुतकरअपनागहराप्रेमप्रकटकियाहैय यथा–

''क्षिप्रा बह रहीहै/मालव–मधुमेदिनीमें...

आँचल की ओटलिए/गाथाएँ सहस्राब्दियोंकी।

'सुमन' जी के प्रेमऔर शृंगार के गीतोंमेंलोक–गीतोंऔर 'लोक–धुनों का प्रयोगहुआहै, जिनमेंलोक–गीतों के अनुरूप छंद, लय, शब्द–विधानहैं।लोक–गीतों का सीधा संबंध जनता के हृदय से होताहै। 'आगयाबसंत', 'आसोंआमबहुतबौराए', 'होली', 'मैंअकेलाऔरपानीबरसताहै', 'शरद–पूर्णिमाजैसीकविताओंमेंलोक–संगीत का प्रभावहै। 'होली की धुन 'होली' और 'रंग–पंचमी' कवितामेंगूंजतीहैय यथा

''आजसुबह से बदली–बदलीबोलीहै,/लोल कपोलोंमेंअबीरहै, रोलीहै,/होली, होलीकहतेतारेभाग गए,/अंबर की आँखोंमें शोख ठठोलीहै।''

इसीतरहवर्षा का दृश्य सरसलोकगीतमेंप्रस्तुतहैय यथा–

''गगन की गगरीभरीफूटीकहींहै/एक हफ्ते से झड़ीटूटीनहींहैकृ

मोरकाम–विभोरगानेलगातराना/विधुर झिल्ली ने नयाछेड़ातराना

निझरों की केलि का भीक्याठिकाना/सरि–सरोवरमेंउमंगों का उठना।

लोक–संगीत की दृष्टि से 'आसोंआमबहुतबौराए' भीउत्कृष्ट कविताहै; यथा–

''नयेटिकोरों की छलनामें/छेल–छबीलेभटके

पुंज–पुंजअभिलाषाओंके/गुच्छे–गुच्छेलटके

होड़ लगीहैसबसेपहले/कौनसीपगदराए

बड़ीबावरी ऋतुआईहै/जो देखेबौराए।''

'सुमन' जी के लोक–गीतोंमेंलौकिकसंवेदनाओं के सहजचित्र उभरेहैं, जिनमेंमिठास–मादकताहै, वेलोकसंस्कृति के संरक्षकभीहैं।

लोकजीवनमेंपर्व, उत्सव, त्योहारों का विशेषमहत्त्वहै।तीज–त्योहारभारतीय लोक–संस्कृति के परिचायकहोतेहैंतथासामूहिकचेतना की गाथालिए होतेहैं। 'सुमन' जी के काव्य में 'विजयादशमी', 'दिवाली', 'होली', 'रंग–पंचमी', 'गंगा–दशहरा', 'शरदपूर्णिमा' आदिलोकोत्सवों की अभिव्यंजनाहुईहै। 'विजयादशमी' आश्विन शुक्लादशमीकोमनायाजाताहै।कवि ने इस पर्वको युगीनबुराइयोंपरविजय प्राप्तकरने की भावना के रूपमेंमनानेपर बल दियाहै य यथा

'घर–घरदीपसंजोए जायँ निष्ठा केध्अमा का अँधेराजिन्हें देख–देख थरथराए।

कार्तिकमास की अमावस्याकोदीपावली का उत्सवदीपजलाकरहर्षोल्लास के साथमनायाजाताहै। 'फिरआगईदिवाली' और 'ज्योतिपर्व' कविताएँ दीपावली के त्योहारपररचितहैं।दिवाली के दिनरात्रि मेंविधिवत् लक्ष्मी–गणेशपूजनकियाजाताहै, खील, बताशे एवंमिठाईबाँटीजातीहैं, कवि ने इस परम्पराको वाणी दीहैय यथा–

''भरे–पूरों के घरमें/ लक्ष्मी पूजन के सामानजुटेंगे/रजत–स्वर्ण की चकाचौंध में

खीलबँटेंगी, फूललुटेंगे/छाईहोगीगृह–पथ–आँगनमेंजगमगउजियाली।

कवि–दृष्टिमेंदीपावलीमनाने के सहीअधिकारी, वेलोगहैं–जिनके घर–घरदीपजलानेमेंहीजीवन–दीपबुझ गए औरवास्तविकदिवालीतबहोगी, जब घर–घरसुख–समता के फूल खिलेंगेअर्थात् शोषितजनभी खुशीकोआनंदपूर्वक मना सकेंगे।

'होली' उत्साहऔरउमंग का लोकोत्सवहैं। यह फाल्गुनीपूर्णिमाकोदेशभरमेंराग–रंग के साथमनायाजाताहै। 'होली', 'रंग–पंचमी' और 'मालीपुरा की होली' आदिकविताओंमेंहोलीजलाने, बालियाँ भूनने, गुलालमलने, मीठीगालियाँ देने, ढोलक की थापपरनाचने–गाने की लोक–परम्पराको वाणी मिलीहैय यथा

''घर–घर की होलीमेंभूनोबालियाँ/नईफसल की खुशहाली की डालियाँ/छोलाछीलो, चोलाबदलोप्यारमें/होलाभूनोहोली के सत्कारमें

नयेतरन्नुममेंनाचो दे तालियाँ/प्यारलुटरहाहैदेंलोमीठीगालियाँ।''

यहाँ कवि ने पर्व की प्रकृति के अनुरूपजीवंतपरिवेशउपस्थितकरलौकिकसंस्कृति के प्रतिगहराप्रेमप्रदर्शितकियाहै।वेपर्वमेंसभीको शामिलकरतेहैंय यथा–

''मलोअबीर–गुलाल, तुम्हेंअधिकारहै/...।होलीतो बस लाली का त्योहारहै/कोईमुख नीला–पीलारहजाएगा/तोफिरपर्वतुम्हारा सब ढह जाएगा।''

"सबकी खातिरहोबिछड़ेमहमान–सी/राशि–राशि खुशियाँ उमड़ें खलिहान–सी.''

कवि ने न केवललोक–जीवन की सुधि ली, बल्किउसकेबीचजाकरलौकिकसुख–दुःख मेंभीहाथबँटायाहै।वेलोक जीवन को खुशहाल देखने के आकांक्षीहैं।उन्होंनेलोकोत्सवोंमेंलोगों की मस्ती, उत्साह, आनंदऔरउल्लास के भावोंकोस्थानदियाहैं, यह कर्मलोक–संस्कृति का पोषकहै; यथा–

''ठंडी मत होनेदोचिंगारियाँ/लाओलाओ सब अपनीपिचकारियाँ .... सावन की बौछारभरोपिचकारीमें/बीन–बाँसुरी चंग भरोपिचकारीमेंढोलक, झाँझ, मृदंगभरोपिचकारीमें/इंद्रधनुष के रंगभरोपिचकारीमें.../इसीरंगमेंरंग दे सब संसारको।''

इसीतरह 'मालीपुरा की होली' कवितामेंउज्जैन के मालीपुराअंचल का ऐतिहासिकसांस्कृतिकवैभवप्रत्यक्ष हुआहै।कवि–दृष्टिमें– ''उज्जयिनी का मालीपुरा/सचमुचनिरालाहै ...। गलियाँ–चौराहेसब/उमड़–उमड़ उठतेहैं/उन्मद–नदअनियन्त्रित ।''

'गंगा–दशहरालोकोत्सवज्येष्ठ शुक्लदशमी से पूर्णिमातकगंगामेंसामूहिकस्नानऔरमेले के साथमनायाजाताहै। 'गंगा–दशहरा' कवितामेंकवि ने इस पर्व का जीवंतचित्र उपस्थितकियाहै, जिसमेंपुए, बताशे, लड्डू, पेड़े, मूंगफली, बरफीआदि के खान–पान का उल्लेख भीकियाहै।कुछपंक्तियाँ द्रष्टव्य हैंय यथा

''गंगादशहरासे/पूर्णिमातक/उमड़ पड़ाथामेला...
/मेलामहाबीरनका/भीरन–अभीरन/बरगद के पत्तोंमें'पुए' औबताशे'
बाँध/झूल–झूलरहटोंमें

फूल बन जातीथीं/गंध की सवारियाँ।.../हर–हरगंगे, हर–हर/गंगे की धुनअजम्र/तरबूजों–खरबूजों/ककड़ी के खेतोंमें/जल–तरंग–सीबजती।''

'शरदपूर्णिमा' शीर्षककवितामेंकवि ने 'शरद–पूर्णिमा' लोकोत्सवको वाणी दीहै।कवि ने इसमेंलोक–जीवनऔरप्राकृतिकसुषमा का सजीवचित्र प्रस्तुतकियाहै।

यहाँ उपर्युक्त उद्धरणोंमेंलोक–जीवन के त्योहारों की मस्तीऔरउसमेंझाँकतेउल्लासकोसहजहीलक्षितकियाजासकताहै।कवि ने बिनाकिसीलागलपेट के सीधी–सादीभाषामेंलोक–जीवनऔरउसकीसंस्कृतिको वाणी दीहै। 'व्रत' भी धार्मिकलोकविश्वास के अंग हैं।कवि ने अपनीपत्नी के 'करवाचौथ', 'हरतालिकाव्रत का उल्लेख करपंडितों द्वारादक्षिणालेने के अंधविश्वासको 'सम्पूर्ति'28 कवितामें वाणी दीहै।

लोक–प्राणी जन्म से मृत्यु–पर्यंतअनेकसंस्कारों, आचारोंऔररीति–रिवाजों से गुजरताहै।विवाह के समय की खुशी, उमंग, आनंदको 'गंगा–दशहरा' कवितामेंस्थानमिलाहै।कविअपनीनईदुल्हनकोबैलगाड़ीमेंबिठाकर, बीघापुरस्टेशन से विदाकराकर घरपहुंचतेहैं, इस अवसरपरसास द्वारासुसज्जितदुल्हनकोगलेलगाने का रिवाजहैय यथा

''माँ ने हर्षाश्रुओं सेध्परछनबौछारोंबीच

छिपटायाछोहभरे/सलमासितारोंमें/आवृत्तकलानिधि को।''

'मिट्टी की बारात' शीर्षककवितामेंअंत्येष्टिसंस्कार की लोक–रीतिकोस्थानमिलाहै।पं. नेहरू औरकमलानेहरू की अस्थियों का गंगामेंविसर्जनकरलौकिककर्म–कांड का उल्लेख कियाहै।इसीतरह 'महाप्रयाणकवितामेंगाँधीजी की मृत्यु के उपरांत शोकव्याप्ति, श्मशानमेंदाहसंस्कार का भीउल्लेख हुआहै, यथा

''जनपदउजाड़, सुनसानसियारों की सुनपड़तीहुआ–हुआ

तुमनहींजले, मानवताकी/जलगईचिता, रहगया धुआँ।"

कवि दृष्टिमेंअंतिमआहुति के क्षणमेंपूर्वजों के पद–चिह्नोंपरचलने, उनके नेककार्योंको रूपाकृतिदेनेऔरसाम्प्रदायिकताकोदूरकरनेकोहीमृतक (गाँधी जी) की औसतसंतानों द्वाराकियागयासच्चाश्राद्ध है।

'सुमन' जी के काव्य मेंग्रामीणबोलियों के देशज शब्दों का खूबप्रयोगहुआ, ठेठस्थानीय भाषा का प्रयोग 'गुनिया का यौवन' कवितामेंहुआहैय यथा– 'अच्छेतोमालिकौरह्यो', 'हाँ अच्छाहूँ, तुमनीकीतनारह्यू',

'तुमतोबड़ेढीठहोअबतुम्हरी/कुईयाँ माहमपानी न भरब', 'चलदीन्ह्यो का? मालिकौ जुहार'31 आदि 'गुनिया', 'सुखिया' आदिपात्रों के नाम भीआंचलिकहैं। यत्र–तत्र ग्राम्य संबोधन, ग्राम्य गीतों की मिठासभीहैय यथा

> ''तनमन सब रंगगयारामहीमालिकहै/मइया! मैंतोमरीनजरनीची–नीची/पिचकारी की मारबड़ीआडी–तिरछी/कैसीबहीबयार सखीसीली–सीली/दइयारे! करदीअंगियाँ गीली–गीली।

यहाँ 'मइया' 'दइयारेआदिग्राम्य भाषा के संबोधनहैं।

'सुमन' जी के काव्य मेंव्यक्तसमसामयिकलोक जीवन की अनुगूंज, उन्हेंसीधे धरती से जोड़तीहै।वेलोक–परिवेश से सम्पृक्तकविहैं।उन्होंनेलोक–रुचि, पर्व–त्योहारों, रीति–रिवाजों के साथग्रामीणजन–जीवन का यथार्थचित्र प्रस्तुतकियाहै।उनकाकाव्य पर्व–त्योहारों के अंकनमेंजनता का उत्साहवर्धनकर, उनके विश्वासोंकोसुदृढ़ आधारदेताहैतथालोक–परम्पराओंकोआगे बढ़ाने का कार्यकरताहै, जिसेलोकसंस्कृति का पोषक–संरक्षककाव्य कहेंतोअत्युक्ति न होगी।

सन्दर्भ

1. प्रलय सृजन (गुनिया का यौवन), सुमन समग्र–1, वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1997 ई. पृ. 164
2. वही, पृ. 164
3. जीवन के गान (कैसा मधुरसुप्रभात था), सुमन समग्र–1, पृ. 85
4. वही, पृ. 85
5. प्रलय सृजन (गुनिया का यौवन), सुमन समग्र–1, पृ. 164–165
6. वही (चल रहीउसकी कुदाली), सुमन समग्र–1, पृ. 162
7. वही, पृ. 162
8. जीवन के गान (कैसा मधुरसुप्रभात था), सुमन समग्र–1, पृ. 84–85
9. मिट्टी की बारात (इनको चूमो), सुमन समग्र–2, वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1997, पृ. 109
10. वही (आषाढ़ का पहला दिन), सुमन समग्र–2, पृ. 110
11. वहीपृ. 110, 111
12. वही (आभास), सुमन समग्र–2, पृ. 113
13. परआँखेंनहींभरी (तीन चित्र), सुमन समग्र–1, पृ. 308
14. कटेअंगूठों की बंदनवारें (गाँव में बरसात), सुमन समग्र–2, पृ. 294
15. हिल्लोल (गौरय्या), सुमन समग्र–1, पृ. 65
16. वाणी की व्यथा (प्रवाह और परंपरा), सुमन समग्र–2, पृ. 239
17. विंध्यदृहिमालय (होली), सुमन समग्र–2, पृ. 41
18. वही (मैं अकेलाऔरपानीबरसता है), सुमन समग्र–2, पृ. 40

19. वही (आसों आमबहुत बौराए), सुमन समग्र–2, पृ. 45
20. मिट्टी की बारात (विजया दशमी). सुमन समग्र–2, पृ. 198–199
21. वही (फिर आगई दिवाली), सुमन समग्र–1, पृ. 243
22. विश्वास बढ़ताहीगया (फिर आगई दिवाली), सुमन समग्र–1, पृ. 243–244
23. विंध्यदृहिमालय (रंग–पंचमी), सुमन समग्र–2, पृ. 42
24. वहीपृ. 42–43
25. वहीपृ. 44
26. मिट्टी की बारात (मालीपुरा की होली), सुमन समग्र–2, पृ. 120–121
27. वाणी की व्यथा (गंगा–दशहरा), सुमन समग्र–2, पृ. 257–258
28. वही (सम्पूर्ति), सुमन समग्र–2, पृ. 262
29. वही (गंगा–दशहरा), सुमन समग्र–2, पृ. 256
30. परआँखेंनहींभरी (महाप्रयाण), सुमन समग्र–1, पृ. 361
31. प्रलय–सृजन (गुनिया का यौवन), सुमन समग्र–1, पृ. 166, 167, 170
32. विंध्य–हिमालय (रंग–पंचमी), सुमन समग्र–2, पृ. 43, 44